❶ ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

महर्षि दयानन्द जी की 200वीं जयन्ती एवं 150वें आर्यसमाज स्थापना वर्ष के आयोजनों का समापन
आर्यसमाज सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन
30 अक्तूबर से 2 नवम्बर, 2025 दिल्ली

वर्ष 48, अंक 37 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 7 जुलाई, 2025 से रविवार 13 जुलाई, 2025
विक्रमी सम्वत् 2082 सृष्टि सम्वत् 1960853126
दयानन्दाब्द : 202 पृष्ठ : 8
वार्षिक शुल्क : 250 रुपये दूरभाष: 23360150
ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती एवं 150वें आर्यसमाज स्थापना वर्ष के दो वर्षीय आयोजनों का समापन समारोह

आर्यसमाज सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, दिल्ली
30-31 अक्तूबर एवं 1-2 नवम्बर, 2025 (गुरुवार से रविवार)

ऐतिहासिक एवं अभूतपूर्व आयोजन हेतु दिल्ली संयोजक समिति की बैठक सम्पन्न
तैयारियों हेतु दिल्ली की आर्यसमाजों में निरन्तर जारी हैं जन सम्पर्क महा अभियान बैठकें

आर्य समाज द्वारा अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलनों का इतिहास अत्यंत प्राचीन है। सन 1927 से समय-समय पर वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों के प्रचार-प्रसार और विस्तार के लिए, महर्षि दयानंद सरस्वती जी की कल्याणकारी शिक्षाओं को जन-जन तक पहुंचाने के उद्देश्य से पूरे विश्व के आर्यजन एकजुट होकर अपनी संगठन शक्ति का परिचय देते आ रहे हैं। इसी वृहद श्रृंखला में महर्षि दयानंद सरस्वती जी के 200वें जयंती वर्ष और आर्य समाज के 150वें स्थापना वर्ष के दो वर्षीय आयोजनों के समापन समारोह के रूप में आगामी 30 अक्टूबर से 2 नवम्बर 2025 तक भारत के दिल, दिल्ली, में अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन अत्यंत उमंग, उत्साह और उल्लास के वातावरण में आयोजित होना सुनिश्चित है। इस ऐतिहासिक और अभूतपूर्व महासम्मेलन में विश्व के 40 देशों से आर्य नर-नारी भारी संख्या में सहभागी बनेंगे, इस महान अवसर को लेकर भारत और विदेशों की सभी प्रांतीय सभाएं, विश्व की आर्य समाजें, गुरुकुल, कन्या गुरुकुल, आर्य विद्यालय, डी.ए.वी शिक्षण संस्थान, अनाथालय, वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम, आर्य प्रतिष्ठान और प्रत्येक महर्षि दयानंद सरस्वती जी का अनुयाई, आर्य समाजी उत्साह से परिपूर्ण है।

अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2025 को लेकर 6 जुलाई 2025 को आर्य समाज हनुमान रोड के सभागार में दिल्ली संयोजक समिति की अहम बैठक सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी अध्यक्षता में सहर्ष संपन्न हुई, जिसमें दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य केंद्रीय सभा, दिल्ली राज्य, वेद प्रचार मंडल, आर्य पुरोहित सभा, आर्य वीर-वीरांगना दल और आर्य समाजों के अधिकारी, कार्यकर्ता और सदस्य उपस्थित रहे। ज्ञात हो कि उपरोक्त आर्य समाजों, सभाओं के अधिकारी पूर्व में हुए सम्मेलनों में संयोजन समिति के अनुभवी कार्यकर्त्ताओं के रूप में कुशलता सिद्ध कर चुके हैं।

इस अवसर पर आर्य महा सम्मेलन

- सम्बन्धित समाचार एवं शेष पृष्ठ 5 एवं 7 पर

सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, दिल्ली 2025 की सम्पूर्ण तैयारियों की चर्चा एवं रूपरेखा निर्धारित करने हेतु प्रान्तीय सभाओं, प्रमुख आर्य संगठनों, दिल्ली आयोजन समिति, दिल्ली एवं दिल्ली आस-पास के प्रमुख संगठनों, आर्यसमाजों, शिक्षण संस्थानों, आर्य वीर-वीरांगना दल के अधिकारियों, कार्यकर्ताओं, आर्य संन्यासियों, वैदिक विद्वानों, पुरोहितों एवं पत्र-पत्रिकाओं के सम्पादकों की

विशेष बैठक : 27 जुलाई, 2025 ★ सायं 4 बजे ★ आर्य समाज ग्रेटर कैलाश-1

जैसा कि आप जानते ही हैं कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती एवं आर्यसमाज स्थापना के 150 गौरवपूर्ण वर्ष के दो वर्षीय आयोजनों का शुभारम्भ माननीय प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने 12 फरवरी, 2023 को भव्य रूप से '**ज्ञान ज्योति पर्व**' के रूप में किया गया। दो वर्षों तक चले समस्त आयोजनों का समापन समारोह "सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा" द्वारा गठित 'ज्ञान ज्योति पर्व आयोजन समिति' एवं "दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा" के संयुक्त तत्वावधान में **"सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, दिल्ली-2025"** के रूप में दिनांक **30-31 अक्टूबर एवं 1-2 नवम्बर, 2025** को आयोजित किया जा रहा है। इस महासम्मेलन की सम्पूर्ण तैयारियों की चर्चा एवं रूपरेखा और उसमें विभिन्न संगठनों की भूमिका निर्धारित करने के लिए एक **विशेष बैठक 27 जुलाई, 2025 (रविवार)** को **सायं 4 बजे** से **आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश पार्ट-1, नई दिल्ली-110048** में आमन्त्रित की गई है।

इस विशेष बैठक में सारे देश की प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं के प्रमुख अधिकारी सम्मिलित होंगे, साथ ही अति विशिष्ट महानुभावों का मार्गदर्शन हमें प्राप्त होगा। अतः समस्त आर्यसमाजों, शिक्षण संस्थानों, दल्ली एवं दिल्ली आस-पास के प्रमुख संगठनों, आर्य वीर-वीरांगना दल के अधिकारियों, कार्यकर्ताओं, आर्य संन्यासियों, वैदिक विद्वानों, पुरोहितों, पत्र-पत्रिकाओं के सम्पादकों से अनुरोध है कि बैठक में अवश्य सम्मिलित होवें और इस ऐतिहासिक महासम्मेलन के विशाल आयोजनों में अपना सहयोग प्रदान करने की कृपा करें। सभी महानुभावों को बैठक हेतु निमन्त्रण/ऐजेण्डा व्हाट्सएप्प से भेजा गया है। धन्यवाद सहित

निवेदक

सुरेन्द्र कुमार आर्य	सुरेशचन्द्र आर्य	धर्मपाल आर्य	विनय आर्य	सुरेन्द्र रैली	सतीश चड्डा	विजय लखनपाल	राजेन्द्र वर्मा
अध्यक्ष	प्रधान	प्रधान	महामन्त्री	प्रधान	महामन्त्री	प्रधान	मन्त्री
ज्ञान ज्योति पर्व आ.स.	सार्वदेशिक आ.प्र.सभा	दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा		आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली		आ.समाज ग्रेटर कैलाश-1	

वेद-स्वाध्याय

थोड़ी-सी उपासना भी महान् फलदायक

देववाणी-संस्कृत

कदु प्रचेतसे महे वचो देवाय शस्यते। तदिद्ध्यस्य वर्धनम्।
-साम० पू० 3।1।4।2
ऋषिः- **मारीचः कश्यपः**।। देवता-**विश्वेदेवाः**।। छन्दः-**गायत्री**।।

शब्दार्थ-महे = महान् **प्रचेतसे**= बड़े ज्ञानी **देवाय** = इष्टदेव परमेश्वर के लिए **कत् उ**= कुछ भी, थोड़ा-सा भी **वचः शस्यते** =वचन - स्तुतिरूप में कहा जाए **तत् इत् हि** = वह ही निश्चय से **अस्य**= इस वक्ता का **वर्धनम्**=बढ़ाने वाला है।

विनय- प्रभु की थोड़ी-सी भी भक्ति महान् फल देने वाली होती है। हम लोग समझा करते हैं कि थोड़े- से सन्ध्या-भजन से, एक-आध मन्त्र द्वारा उसका स्मरण कर लेने से हमारा क्या लाभ होगा, या एक दिन यह भगन छोड़ देने से हमारी क्या हानि परन्तु यह सत्य नहीं होगा? हमारी उपासना चाहे कितनी स्वल्प और तुच्छ हो, परन्तु वह उपास्यदेव तो महान् है। ज्ञान और शक्ति में वह हमसे इतना महान् है कि हम कभी भी उसके योग्य उसकी पूरी भक्ति नहीं कर सकते और उसके सामने हम इतने तुच्छ हैं कि यदि थोड़ी देर के लिए भी उससे अपना सम्बन्ध जोड़ते हैं तो वह महान् देव उस थोड़े-से समय में ही हमें भर देता है। सन्त लोग अनुभव करते हैं कि प्रभु का क्षण-भर ध्यान करते ही प्रभु की आशीर्वाद धारा उनके लिए खुल जाती है और वे उस क्षण-भर में ही प्रभु के आशीर्वाद से नहा जाते हैं; एक बार प्रभु का नामोच्चारण करते ही उन्हें ऐसा आवेश आता है कि शरीर रोमांचित हो जाते हैं और आत्मा अनान्दरस से पवित्र और प्रफुल्ल हो जाते हैं, परन्तु यदि हम साधारण लोगों की प्रार्थना-उपासना अभी उस महाप्रभु से इतना ऐश्वर्य नहीं पा सकती है, जब तो हमें उसके थोड़े-से भी भजन का नियमित सेवन करना चाहिए, एक भी दिन, एक भी समय नागा न करना चाहिए। एक समय भी नागा होने से जो सम्बन्ध विच्छिन्न हो जाता है, वह फिर जोड़ना पड़ता है। यही कारण है कि नागा होने पर प्रायश्चित का विधान है। एवं एक समय नागा होने से एक समय की देरी ही नहीं होती, अपितु दुबारा सम्बन्ध जोड़ने जितनी देरी हो जाती है, अतः हम चाहे किसी दिन भजन में बिल्कुल दिल न लगा सकें, तथापि उस दिन भी कुछ-न-कुछ उपासना अवश्य करनी चाहिए, यत्न अवश्य करना चाहिए। पीछे पता लगता है कि एक दिन का भी यत्न व्यर्थ नहीं गया, एक-एक दिन की उपासना ने हमें बढ़ाया है- हमारे शरीर मन और आत्मा को उन्नत किया है।

कम-से-कम यह तो असन्दिग्ध है कि संसार की अन्य बातों में हम जितना समय देते हैं, सांसारिक बातों की जितनी स्तुति-उपासना करते हैं और उससे जितना फल हमें मिलता है, उससे अनन्त गुणा फल हमें प्रभु की (अपेक्षया बहुत ही थोड़ी-सी) स्तुति उपासना से मिल सकता है और मिल जाता है। कारण स्पष्ट है, क्योंकि वह महान् है, ज्ञान का भण्डार है, सर्वशक्तिमान है और ये सांसारिक बातें अल्प हैं, तुच्छ निस्सार हैं, केवल ज्ञान शक्तिविहीन विकार हैं।

-: साभारः- वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

महाराष्ट्र में हिंदी के विरोध से क्या मराठी का अस्तित्व बढ़ेगा?

150 वर्षों के इतिहास में हिंदी के संरक्षण और संवर्धन के प्रति समर्पित रहा है - आर्य समाज

महाराष्ट्र में मराठी भाषा के अस्तित्व को बचाने के बहाने से अपनी राजनीति चमकाने के प्रयास की चालाकी बहुत पुरानी बात है। वहां बिहार, यू.पी. और अन्य राज्यों के लोगों को बेगाना बताकर, उपेक्षा और तिरस्कार करके मारा-पीटा तक जाता रहा है। लेकिन बाला साहब ठाकरे के पुत्र श्री उद्धव ठाकरे और उनके चचेर भाई राज ठाकरे जो काफी लंबे समय से अपनी अलग-अलग राजनीति कर रहे थे, वे जब एक साथ-एक मंच पर आए तो उससे पहले ही मराठी बनाम हिंदी भाषा के विवाद का हंगामा आरंभ हो गया। शनिवार 5 जुलाई 2025 को दोनों ने मिलकर विजय रैली निकाली और अपने समर्थकों के बीच भाषण भी दिए। इस अवसर पर दोनों चचेरे भाई आपस में गले भी मिले। साथ आए हैं और साथ रहेंगे'' भी ये घोषणा भी की कई। जो कि हर तरह से अच्छी बात है। किंतु हिंदी थोपने की फर्जी आड़ लेना और मराठी अस्मिता का हवाला देना भाषा की राजनीति के अलावा और कुछ नहीं। इसे ठाकरे बंधुओं ने यह कहकर साबित भी कर दिया कि हम दोनों मुंबई नगर निगम और महाराष्ट्र की सत्ता हासिल करेंगे। वास्तव में यही मूल उद्देश्य है और इसी कारण हिंदी विरोध की कुछ वैसी ही समाज और देश विरोधी राजनीति की जा रही है, जैसी तमिलनाडु और कर्नाटक में देखने को मिलती रहती है। यदि ठाकरे बंधु और उनके समर्थक यह सोच रहे हैं कि हिंदी का हौवा खड़ाकर वे महाराष्ट्र के लोगों की भावनाओं को भड़काने और राजनीतिक लाभ हासिल करने में समर्थ हो जाएंगे तो यह संभव होगा या असंभव, ये भविष्य की बात है। आमतौर पर लोग समझदार होते हैं और ऐसी राजनीति को अच्छे से समझते हैं। यह भी एक यथार्थ है कि कम से कम राजनीति में एक और एक ग्यारह नहीं होते। इसके तमाम उदाहरण अतीत में देखने को भी मिल चुके हैं।

यह आश्चर्यजनक है कि हिंदी विरोध की राजनीति उस महाराष्ट्र में की जा रही है, जहां हिंदी समर्थक नेता, साहित्यकार, गीत-संगीत के दिग्गजों की गिनती करना कठिन है। मुंबई तो हिंदी फिल्म उद्योग का घर है। हिंदी सिनेमा ने महाराष्ट्र के लाखों मराठी भाषी लोगों को इज्जत, शोहरत और सब कुछ तो दिया है। वे इसे स्वीकार भी करते हैं। क्या अब ठाकरे बंधु मुंबई से हिंदी फिल्म उद्योग बाहर करने की मांग करेंगे? तमिलनाडु, कर्नाटक और महाराष्ट्र के भाषा कट्टरपंथी कुछ भी कहें, देश की सर्वाधिक उपयोग में आने वाली भाषा के रूप में हिंदी स्वीकृत और प्रतिष्ठित है। यह भी एक सच है कि इस देश की कोई संपर्क भाषा हो सकती है तो वह हिंदी ही है। अंग्रेजी यह काम नहीं कर सकती। भारतीय संस्कृति का पोषण तो भारत की भाषाओं से ही हो सकता है और इस पोषण की आवश्यकता भी है। भाजपा राजनीतिक कारणों से हिंदी विरोध की गंदी राजनीति के खिलाफ तीखे तेवर नहीं अपना सकती, लेकिन कम से कम केंद्र सरकार को इस दुष्प्रचार के खिलाफ खड़ा होना चाहिए कि हिंदी थोपी जा रही है। यह निरा झूठ है। हिंदी अपनी स्वीकार्यता के कारण बढ़ रही है। देश के कम से कम 90 प्रतिशत लोग हिंदी समझ लेते हैं। जो इस सच्चाई से इन्कार करते हैं, वे स्टालिन, राज ठाकरे और उद्धव ठाकरे जैसे नेता या उनके समर्थक ही हैं।

देश के स्वतन्त्र होते ही भारत वर्ष की राष्ट्रभाषा क्या हो इस पर पूरे देश में चर्चा हुई और ज्यादातर भारतीय हिन्दी भाषा का ही प्रयोग करते हैं, इस आधार पर संविधान द्वारा हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार किया गया। यहां पर यह जानना भी आवश्यक है कि संविधान द्वारा हिन्दी को राष्ट्भाषा कैसे स्वीकारा गया -क्योंकि आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी स्वयं 'गुजराती' भाषी होने पर पहले मातृभाषा संस्कृत का प्रयोग करते थे, किन्तु बाद में वेदों के गूढ़ ज्ञान को जन-जन तक पहुंचाने के लिए उन्होंने कालजयी ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश से लेकर समस्त साहित्य का लेखन हिंदी में ही किया, महर्षि का पत्र व्यवहार आदि सारे कार्य हिंदी में ही होते थे, महर्षि भाषण, प्रवचन और शास्त्रार्थ आदि सारे कार्य हिंदी में ही करते थे, इसके पीछे महर्षि की भावना यह थीं कि हिंदी राष्ट्रभाषा बने, जिससे सारे भारत में मुगलों द्वारा फारसी और उर्दू का प्रयोग होता था, इसके बाद अंग्रेजी का चलन बढ़ गया, संस्कृत तो केवल कर्मकाण्ड की भाषा बनकर रह गई थी। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने अपने जीवन काल में और बाद में उनकी प्रेरणा से आर्य समाज ने देश की स्वाधीनता के बाद भी हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने के लिए एतिहासिक सत्याग्रह किए और बलिदान तक दिए।

देश की आजादी के बाद जब संविधान द्वारा हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार तो किया गया लेकिन कांग्रेस की तुष्टिकरण की नीति ने पंजाब में विभिन्न कारणों की आड़ में हिन्दी को पंजाब की मुख्य भाषा न मानकर पाँच प्रतिशत सिखों की गुरुमुखी को 95 प्रतिशत हिन्दी भाषियों पर थोपने का कुचक्र तत्कालीन पंजाब के मुख्यमन्त्री सरदार प्रताप सिंह कैरो ने किया। क्योंकि वह अकाली दल का कट्टर सिक्ख था। उस समय पंजाब और हरियाणा एक ही पंजाब प्रान्त में गिने जाते थे। हरियाणा के अधिकांश लोग अपना भाषा व्यवहार हिन्दी में ही करते थे। केन्द्र की नेहरू सरकार और पंजाब की कैरो सरकार गुरुमुखी को हिन्दुओं पर लादकर उन्हें दवाव में रखना चाहती थी। वैसे भी पं० जवाहरलाल नेहरू हिन्दुओं की भीरु वृत्ति का सन् 1947 से ही अपने मन मुताबिक लाभ उठाते रहे हैं। - शेष पृष्ठ 7 पर

''देश के स्वतन्त्र होते ही भारत वर्ष की राष्ट्रभाषा क्या हो इस पर पूरे देश में चर्चा हुई और ज्यादातर भारतीय हिन्दी भाषा का ही प्रयोग करते हैं, इस आधार पर संविधान द्वारा हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार किया गया। यहां पर यह जानना भी आवश्यक है कि संविधान द्वारा हिन्दी को राष्ट्भाषा कैसे स्वीकारा गया -क्योंकि आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी स्वयं 'गुजराती' भाषी होने पर पहले मातृभाषा संस्कृत का प्रयोग करते थे, किन्तु बाद में वेदों के गूढ़ ज्ञान को जन-जन तक पहुंचाने के लिए उन्होंने कालजयी ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश से लेकर समस्त साहित्य का लेखन हिंदी में ही किया, महर्षि का पत्र व्यवहार आदि सारे कार्य हिंदी में ही होते थे, महर्षि भाषण, प्रवचन और शास्त्रार्थ आदि सारे कार्य हिंदी में ही करते थे, इसके पीछे महर्षि की भावना यह थीं कि हिंदी राष्ट्रभाषा बने, जिससे सारे भारत में मुगलों द्वारा फारसी और उर्दू का प्रयोग होता था, इसके बाद अंग्रेजी का चलन बढ़ गया, संस्कृत तो केवल कर्मकाण्ड की भाषा बनकर रह गई थी । महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने अपने जीवन काल में और बाद में उनकी प्रेरणा से आर्य समाज ने देश की स्वाधीनता के बाद भी हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने के लिए एतिहासिक सत्याग्रह किए और बलिदान तक दिए।''

150वें आर्यसमाज स्थापना वर्ष पर विशेष

आर्यसमाज द्वारा किये गये 150 ऐतिहासिक कार्य

गतांक से आगे -

यह लेख आचार्य राहुलदेव जी द्वारा समस्त जन साधारण, आर्यजनों एवं सुधीपाठकों की जानकारी एवं ज्ञानवर्धन के लिए प्रस्तुत किया गया है। इस लेख में आर्यसमाज के 150 वर्षों के इतिहास में आर्यसमाज द्वारा किए गए 150 ऐतिहासिक कार्यों को उद्धृत किया गया है, जिसका आप भी अपने स्तर पर सोशल मीडिया तथा अन्य संसाधनों से प्रचार कर सकते हैं। - सम्पादक

100. आर्यसमाज ने ये सिद्ध किया कि वेदों के मंत्र और विज्ञान के सूत्र एक समान हैं।
101 आर्यसमाज ने जन्म पत्रिका का घोर विरोध किया और इसे मरण पत्रिका बताया क्योंकि यह वेद विरुद्ध है।
102 आर्यसमाज अनेक-अनेक ईश्वरवाद का खण्डन किया। एक ही ईश्वर की उपासना रीत सिखलाई जिससे लाखों लोगों का कल्याण हुआ।
103 आर्यसमाज ने मनुष्य मात्र के लिए एक जैसी शिक्षा पद्धति और अनिवार्य शिक्षा का पुरजोर प्रचार किया
104. स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेने वाले अधिकतर क्रांतिकारी आर्य समाज से प्रेरित थे।
105. महान स्वतंत्रता सेनानी लाला लाजपत राय आर्य समाज को अपनी मां बताते थे।
106. पंडित राम प्रसाद बिस्मिल बचपन में आर्य समाज से जुड़ चुके थे, आर्यसमाज के लिए उन्होंने घर तक त्याग दिया था।
107. अमर बलिदानी सरदार भगत सिंह का सारा परिवार आर्य समाज से प्रभावित था।
108. आर्य समाज के विद्वान पंडित लोकनाथ तर्क वाचस्पति ने सरदार भगत सिंह का यज्ञोपवीत संस्कार करवाया था।
109. भगत सिंह के दादाजी अर्जुन सिंह का महर्षि दयानंद सरस्वती ने यज्ञोपवीत कराया था।
110. आर्य समाज कलकत्ता 19 विधान सरणी में अमर शहीद सरदार भगत सिंह, क्रांतिकारिणी दुर्गा भाभी के साथ दो बार आकर ठहरे थे।
111. आर्य समाज वेद पर आधारित शासन व्यवस्था का अनुमोदन करता है।
112. आर्य समाज रामकृष्ण आदि को दिव्य महापुरुष मानकर उनके चरित्र की पूजा करता है।
113. आर्य समाज ने मूर्तिपूजा को भारत की अवनति का एक कारण माना और लोगों को समझाने में सफल हुआ है।
114. आर्य समाज ने मनुष्य की उन्नति के लिए 16 संस्कारों पर अत्यधिक कार्य किया और इसको संपन्न कराने वाले हजारों पुरोहित तैयार किये।
115. आर्य समाज ने हिंदुओं को मृतक श्राद्ध और उसके पाखंड से निकालने के बहुत से प्रयास किए हैं।
116. आर्य समाज संस्कृत भाषा को सर्वोपरि मानता है।
117. आर्य समाज संस्कृति के प्रचार-प्रसार में सदैव संलग्न रहता है।
118. आर्य समाज महर्षि पाणिनि द्वारा रचित व्याकरण को सर्वोपरी की मानता है।
119. आर्य समाज चार वेद संहिताओं को ईश्वर कृत मानता है
120. आर्य समाज ने चारों वेदों का अनुसरण करने वाले ग्रन्थों का आर्ष ग्रंथों के रूप में प्रचार-प्रसार किया है।
121. आर्यसमाज ने विधर्मियों के द्वारा किए जा रहे आक्रमणों का शास्त्रोक्त तरीके से शास्त्रार्थ में विजय प्राप्त करके सनातन की रक्षा की है।
122. श्याम जी कृष्ण वर्मा महर्षि दयानंद के शिष्य थे जिन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन में महत्व पूर्ण भूमिका निभाई थी।
123. आर्यसमाज ने स्वतंत्रता से पहले भारतीयों के लिए पंजाब नेशनल बैंक खोलने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
124. आर्यसमाज महर्षि दयानन्द द्वारा रचित सत्यार्थ प्रकाश को हिन्दू जाति के लिए सर्वोच्च उपयोगी ग्रंथ मानता है।
125. आर्यसमाज अपने साप्ताहिक सत्संग में नित्य सत्यार्थ प्रकाश का स्वाध्याय एवं पठन-पाठन करता है।
126. आर्यसमाज ने प्रारंभ काल से ही गौ रक्षा के लिए अनेक आन्दोलन किए और आज भी कर रहा है।
127.आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने रेवाड़ी में सर्व प्रथम गौशाला स्थापित की थी और गौ हत्या रोकने के लिये हस्ताक्षर अभियान चलाया था।
128. आर्यसमाज ने प्रारंभ से ही भारतीय वेशभूषा और पहनावा को प्रधानता दी है।

- क्रमशः

परिवर्तन : आता नहीं है - लाया जाता है।

महाभारत काल से 19वीं सदी तक का परिवर्तन काल

भारतीय संस्कृति एवं साहित्य को मुगलों एवं अंग्रजों समाप्त करने कार्य

गतांक से आगे -

इन्हीं मुगल शासकों ने जो सबसे भयानक काम शुरू किया, वह था इस देश के सामान्य जनमानस को मुस्लिम बनाने का षड्यंत्र। प्रेम से, प्यार से, दबाव से, लोभ से, लालच से, शासन से, दंड से, भय से, नौकरी देकर, विवाह करवा कर, फांसी का डर देकर और न जाने किन-किन तरीकों से लाखों हिन्दुओं को मुस्लिम बनाया गया और सभी शासकों ने इसको अपना सबसे बड़ा धार्मिक और राजनीतिक कर्त्तव्य समझा। जो हिन्दू मुस्लिम न बने उस पर विशेष कर लगाया गया। उस विशेष 'कर' की मार से बचने के लिए भी लाखों लोगों ने मुस्लिम मत अपनाया। अपराध किए जाने पर पकड़े जाने के समय जिनको बंदी बनाया जाता था, उनकी रिहाई की एक शर्त होती थी कि वो मुस्लिम धर्म ग्रहण कर ले।

समाज को बांटने का काम भी इसी काल की देन है। जो हिन्दू, किसी मुस्लिम को पानी पिला देता था उसे अछूत मान लिया जाता था। उसे न हिन्दू अपनाते थे और न मुसलमान। अंत में उसको मुस्लिम बनने का प्रस्ताव किया जाता था, वह हिन्दू बने रहना भी चाहता था, तो अंधविश्वास की जड़ें इतनी गहरी हो चुकी थी कि कोई वापस उनको हिन्दू बनाने को तैयार नहीं था।

हमारा एक वर्ग जो मेहतर का काम करता था, वह मुसलमानों के यहां भी काम कर रहा था। उसको भी हिन्दू वर्ग ने अछूत मान लिया और उनका एक बहुत बड़ा वर्ग इसी हीनता से मुस्लिम बन गया। छुआछूत, जातिवाद आदि की बुराइयां समाज में इसी समय में बढ़ी। और इसी छुआछूत के कारण धर्मांतरण को तेज गति मिली।

धार्मिक स्थानों एवं धार्मिक चिह्नों को समाप्त करना—मुगल और उससे पूर्व के मुस्लिम आक्रांता धर्मांध मुसलमान थे। वे भारत को पूरी तरह से मुस्लिम देश बनाने की दिशा में कार्य करते रहे और करोड़ों भारतीयों की आध्यात्मिक आस्था के सारे केंद्रों को उन्होंने लूटा और उनको तोड़कर मस्जिदों/मुस्लिमों के आस्था के केंद्र के निर्माण कर दिया। काशी विश्वनाथ, अयोध्या, मथुरा, सोमनाथ, मार्तंड सूर्य मंदिर, अनंतनाग कश्मीर, मटेरा सूर्य मंदिर इसका जीता जागता उदाहरण है। इन सभी को तोड़ने के पीछे अथाह धन को लूटना और हमारी सभी मौजूदा धार्मिक आस्थाओं को हमेशा के लिए समाप्त करना ही था।

हजारों मंदिरों और आस्था के स्मारकों को तोड़ने के पश्चात् भी जब यह महसूस किया गया, कि इनकी तो अपने महापुरुषों पर अभी भी अगाध आस्था कायम है। तब एक और भयानक षड्यंत्र की शुरुआत हुई और वह षड्यंत्र था हमारी आस्था के केन्द्र बिन्दु रहे मर्यादा पुरुषोत्तम राम, योगेश्वर श्रीकृष्ण, भगवान शिव, विष्णु आदि के जीवन को कलंकित करने का षड्यंत्र। हमारे ग्रंथों में मिलावट का दौर इसी समय आरम्भ हुआ। रामायण और महाभारत आदि ग्रंथों को उर्दू और फारसी में अनुवाद करवाया गया क्योंकि उनका षड्यंत्र यही था कि आने वाली पीढ़ियां वही रामायण और महाभारत पढ़ें जो फारसी या उर्दू में लिखी गई हैं। हैरान करने वाली बात पाठक देखेंगे की इन पुस्तकों की शुरुआत 'बिस्मिल्लाह ए रहमान अर रहीम' से की गई। बाकी पाठक समझ ही गए होंगे कि कालांतर में अगर केवल फारसी ही जिन्दा रह जाती तो हम एक-एक हिन्दू बालक 'बिस्मिल्लाह ए रहमान अर रहीम' से ही रामायण की शुरुआत करता। जिन श्रीकृष्ण को गीता जैसे महान् ग्रंथ का रचयिता कहते हैं, महाभारत के युद्ध का महानायक कहते हैं, 16 कला संपूर्ण, निष्कलंक व्यक्तित्व बताया जाता है, उस महान् योगीराज श्रीकृष्ण को गोपियों के साथ रास रचाने वाला, राधा के संग नृत्य नाच करने वाला आखिर किसने बताया? किस काल में बताया? क्या कभी हमनें इसका पता लगाने का प्रयत्न किया?

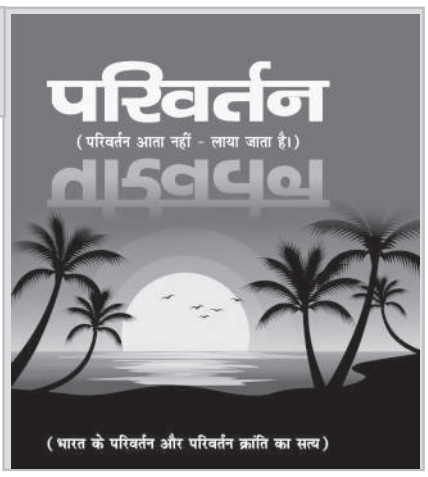

उनका उद्देश्य बड़ा स्पष्ट था, वह इस बात को जानते थे कि लंबे समय तक शासन करने के लिए जरूरी है कि इनकी आस्था का केंद्र बनारस-हरिद्वार न होकर काबा और मदीना हो जाएं। इनकी आस्था के केन्द्र राम-कृष्ण न होकर कोई और हो जाए। इस विषय पर तो 500 सालों की अमानवीयता के इतिहास पर अलग ग्रंथ लिखना पड़ेगा।

- क्रमशः

पुस्तक घर बैठे/ऑनलाइन प्राप्त करने हेतु कोड स्कैन/लॉगइन करें
www.vedicprakashan.com
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
वैदिक प्रकाशन
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
मो. 09540040339, 011-23360150

साप्ताहिक
आर्य सन्देश
7 जुलाई, 2025
से
13 जुलाई, 2025

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि के तत्त्वावधान में आर्य वीर दल एवं आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश द्वारा

हिमाचल में बाढ़ पीड़ितों की सहायता हेतु राहत-बचाव कार्यों में जुटा आर्यसमाज

दिल्ली से रवाना आर्यवीर दल और सेवा समिति के कार्यकर्ताओं ने आरम्भ किए सेवा कार्य

समस्त आर्यजनों, आर्यसमाजों एवं दानी महानुभावों से सहयोग की अपील : दिल खोलकर दान दें

राष्ट्र एवं मानव सेवा को समर्पित आर्य समाज के 150 वें वर्ष के इतिहास का अवलोकन करने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि जब-जब देश, धर्म और संस्कृति के सामने कोई भी चुनौती खड़ी होती है, तब-तब आर्य समाज तन-मन और धन से हर समस्या का समाधान अपनी चिर-परिचित शैली में देता है। देश में जब भी प्राकृतिक आपदाएं मुसीबत बनकर आई, चाहे उनमें भूकंप की त्रासदी हो या बाढ़ का विकराल रूप, आर्य समाज ने आगे बढ़कर आपदा बचाव राहत के कार्यों में अपना शत प्रतिशत योगदान दिया।

अभी जब पिछले दिनों हिमाचल प्रदेश में आसमानी बारिश और बादल फटने से बाढ़ ने भयंकर विकराल रूप धारण किया। तब आर्य समाज के युवा संगठन आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश के आर्य वीरों ने तथा हिमाचल प्रदेश के कर्मठ और जुझारू कार्यकर्ताओं ने आगे बढ़कर बाढ़ आपदा बचाव राहत कार्य में गांव-गांव जाकर के राहत सामग्री वितरण की। जिसमें स्त्री-पुरुषों को वस्त्र, कंबल, गर्म वस्त्र, तिरपाल और अन्य सामग्री भेंट की। यह कार्य अभी लगातार जारी है क्योंकि बाढ़ के समाप्त होने के बाद भी वह बहुत सारे दु:खद चिन्ह छोड़कर जाती है। इसलिए आर्य समाज के आर्यवीर पूरी तरह से मुस्तैद और समर्पित होकर सेवा कार्यों में संलग्न है।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में आर्य वीर दल दिल्ली एवं हिमाचल सभा के कर्मठ अधिकारी, कार्यकर्ता हिमाचल प्रदेश सुन्दर नगर जिलान्तर्गत बाढ़ प्रभावित विभिन्न गावों - लंबाछाछ, बडा, बरवाड़ा, थुनाग, झीझली, जरोल और झंझली गांव में राहत सेवा एवं बचाव कार्य करते हुए प्रभावित परिवारों को वस्त्र, कंबल, तिरपाल आदि राहत सामग्री निरन्तर वितरित कर रहे हैं।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती एवं 150वें आर्यसमाज स्थापना वर्ष के आयोजनों के समापन समारोह

सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, दिल्ली-2025

तैयारियों हेतु दिल्ली की आर्यसमाजों में निरन्तर जारी हैं जन सम्पर्क महा अभियान बैठकें

आर्यसमाज सैनिक विहार

आर्यसमाज मोती बाग एवं आर.के. पुरम् सैक्टर-3

आर्यसमाज गोविन्दपुरी

आर्यसमाज कालकाजी

आर्यसमाज मोहन गार्डन उत्तम नगर

आर्यसमाज यमुना विहार

आर्यसमाज लाजपत नगर

आर्यसमाज मोलडबन्द विस्तार

आर्यसमाज खजूरी खास

आर्यसमाज पालम विहार

आर्यसमाज नजफगढ़

आर्यसमाज हौजखास

आर्यसमाज सरिता विहार

सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन
30अक्तूबर -2 नवम्बर, 2025 दिल्ली
प्रत्येक आर्यजन करें प्रचार

समस्त आर्यसमाजों एवं आर्यजनों अनुरोध है कि सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की तिथियां नोट करें ले और सोशल मीडिया तथा प्रिंट मीडिया के प्रत्येक प्लेटफार्म पर इसका प्रचार करें। आर्यसमाजें अपने साप्ताहिक सत्संगों में नियमित रूप से इसकी सूचना दें, अपने आर्यसमाज की बैठक आमन्त्रित करें और समिति गठित करें तथा समाज के प्रत्येक सदस्य को सपरिवार पहुंचने के लिए प्रेरित करें। इस अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन को भव्य, विराट एवं ऐतिहासिक बनाने में आप सबका सहयोग सादर अपेक्षित है। इस आर्यसन्देश के पृष्ठ 4-5 पर दिया गया पोस्टर अपनी आर्यसमाज के नोटिस बोर्ड तथा सार्वजनिक स्थानों पर प्रदर्शित करें।

– ज्ञान ज्योति पर्व महोत्सव आयोजन समिति

200वीं जयन्ती एवं 150वें आर्यसमाज स्थापना वर्ष के आयोजनों के अन्तर्गत आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू-कश्मीर द्वारा

जम्मू-कश्मीर प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन : 19-20 जुलाई, 2025

स्थान : बाबा जित्तो सभागार, शेर-ए-कश्मीर विश्वविद्यालय, चट्ठा, जम्मू

निवेदक
नरेन्द्र त्रेहन, प्रधान, 9419182941
राजीव सेठी, मन्त्री, 9419182553
योगेश गुप्ता, कोषाध्यक्ष, 7006579919

आप सब सपरिवार इष्टमित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं

साप्ताहिक स्वाध्याय

स्वामी दयानन्द की महानता

गतांक से आगे-

स्वामी दयानन्द सरस्वती राष्ट्रीय, सामाजिक और धार्मिक दृष्टि से भारत का एकीकरण चाहते थे। भारतवासियों को राष्ट्रीयता के सूत्र में ग्रथित करने के लिए उन्होंने देश को विदेशी दासता से मुक्त करना आवश्यक समझा था।

- **रामानन्द चटर्जी** (सम्पादक 'मॉडर्न रिव्यू')

जब भारत के उत्थान का इतिहास लिखा जाएगा तो नंगे फकीर दयानन्द सरस्वती को उच्चासन पर बिठाया जाएगा।

-सर यदुनाथ सरकार

स्वामी दयानन्द मेरे गुरु हैं। मैंने संसार में केवल उन्हीं को गुरु माना है। वह मेरे धर्म के पिता हैं और आर्यसमाज मेरी धर्म की माता है। इन दोनों की गोद में मैं पला। मुझे इस बात का गर्व है कि मेरे गुरु ने मुझे स्वतन्त्रतापूर्वक विचार करना, बोलना और कर्तव्य पालन करना सिखाया तथा मेरी माता ने मुझे एक संस्था में बद्ध होकर नियमानुवर्तिता का पाठ दिया।

-पंजाब केसरी लाला लाजपतराय

स्वामी दयानन्द के उच्च व्यक्तित्व और चरित्र के विषय में नि:सन्देह सर्वत्र प्रशंसा की जा सकती है। वे सर्वथा पवित्र तथा अपने सिद्धान्तों के अनुसार आचरण करने वाले महानुभाव थे। वह सत्य के अत्यधिक प्रेमी थे।

-रेवरेण्ड सी. एफ. एण्ड्रयूज़

इसका श्रेय केवल स्वामी दयानन्द को ही है कि हिन्दू लोग आधी शताब्दी में ही रूढ़िवाद और पौराणिक देवी-देवताओं की पूजा छोड़कर एक अत्यन्त शुद्ध ईश्वरवाद को मानने लगे हैं।

-प्रिंसिपल एस. के. रुर्द

महर्षि दयानन्द ने भारत और संसार मात्र की जो सेवा की है, उसे मैं भली-भांति जानता हूं। वह भारतवर्ष के सर्वोत्तम महापुरुषों में से थे। स्वामी जी ने मातृ-भूमि की सबसे बड़ी सेवा यह की है कि उसमें जातीय शिक्षा का विचार पैदा कर दिया है।

-श्री जी. एस. अरुण्डेल

ऋषि दयानन्द ने हिन्दू-समाज के पुनरुत्थान में इतना अधिक हाथ बटाया कि उन्हें 19वीं शताब्दी का प्रमु तम हिन्दू समझा जाएगा। **-श्री तारकनाथ दास, एम.ए., पी.एच.डी. (म्यूनिख)**

स्वामी दयानन्द भारतवर्ष के उन धार्मिक महापुरुषों में से एक हैं, जिनका गुणानुवाद करने में ही जीवन समाप्त हो सकता है। उन्होंने मन, वचन और कर्म की स्वतन्त्रता का सन्देश दिया तथा मानव मात्र को समानता का उपदेश दिया। वह अपने जीवन और मृत्यु में महान् ही रहे।

-श्रीमती सरलादेवी चौधरानी

महर्षि दयानन्द भारत माता के उन प्रसिद्ध और उच्च आत्माओं में से थे, जिनका नाम संसार के इतिहास में सदैव चमकते हुए सितारों की तरह प्रकाशित रहेगा। वह भारत माता के उन संपूतों में से हैं, जिनके व्यक्तित्व पर जितना भी अभिमान किया जाए थोड़ा है। नैपोलियन और सिकन्दर जैसे अनेक सम्राट् एवं विजेता संसार में हो चुके हैं, परन्तु स्वामी उन सबसे बढ़कर थे।

- दीजा बेगम एम.ए.

ईसाइयत और पश्चिमी सभ्यता के मुख्य हमले से हिन्दुस्तानियों को सावधान करने का सेहरा यदि किसी व्यक्ति के सिर बांधने का सौभाग्य प्राप्त हो तो स्वामी दयानन्द जी की ओर इशारा किया जा सकता है।

19वीं सदी में स्वामी दयानन्द जी ने भारत के लिए जो अमूल्य काम किया है, उससे हिन्दू जाति के साथ-साथ मुसलमानों तथा दूसरे धर्मावलम्बियों को भी बहुत लाभ पहुंचा है। **-पीर मुहम्मद यूनिस**

-क्रमश:

पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति जी द्वारा लिखित एवं 200 वीं जयन्ती पर पुन: प्रकाशित जीवनी 'महर्षि दयानन्द' से साभार पुस्तक प्राप्ति के लिए ऑन लाइन www.vedicprakashan.com अथवा 9540040339 पर आर्डर करें।

Continue From Last Issue

Greatness Of Swami Dayanand

We must acknowledge the great favor of Swami Dayanand in promoting the study of the Vedas and in proving that idol worship is not in accordance with the Vedas. If the promoters of Arya Samaj had done nothing else apart from preparing their followers against the idolatry of the present caste system and its disadvantages, he would have been respected as a great leader of the present India. -German Professor **Dr. Winternitz**

My weak words are unable to describe the importance of a sage. Inspired by the worshipable feelings of my heart, I worship the sage for his matchless celibacy, truthfulness and severe penance.

I respect Rishi nsidering him as most powerful i.e. Karmaveer warrior. His life is refreshing, empowering and honorable for nation-building. Dayanand was an ardent patriot, so I worship him considering him as a National Hero. **-Sadhu T.L.Vaswani**

Swami Dayanand was undoubtedly a sage. He calmly tolerated the brick-stones thrown by his opponents. He merged in himself the great past and the great future. He is immortal even after death. The sage was born to free people from prison and to break caste barriers. Rishi's order is - Aryavarta, wake up! The time has come, enter the new era! move forward! **-Paul Richard**

(famous French writer)

Swami Dayanand Saraswati did a great job of reforming Hinduism, and as far as social reform is concerned, he was very generous-hearted. He based their thoughts on the Vedas and considered them dependent on the knowledge of the sages. He made great commentaries on the Vedas, which shows that he was fully aware. His self-study was very extensive.

-Prof. F. Max Muller

The principles of Swami Dayanand are enshrined in his Satyarth Prakash. The same principle is there in Vedbhashya Bhumika. Swami Dayanand was a religious reformer. He waged an unceasing war with idolatry.

-Sir Valentine Chiraul

To be Continue.....

With courtesy by the biography of "Maharshi Dayanand" re-published on the occasion of 200th birth anniversary and written by Pt. Indra Vidyavachaspati Ji. To buy online login WWW.vedicprakshan.com or contact - 9540040339

सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन : 30 अक्तूबर से 2 नवम्बर, 2025 दिल्ली

रेल यात्रा के माध्यम से दिल्ली आने वाले आर्यजन कृपया ध्यान दें

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती एवं आर्यसमाज के 150वें स्थापना वर्ष के ज्ञान ज्योति पर्व महोत्सव के आयोजनों के समापन के रूप में आयोजित **आर्यसमाज सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली-2025** की तिथियां **30 अक्तूबर से 2 नवम्बर 2025** (बृहस्पतिवार से रविवार) सुनिश्चित हैं। इस अवसर पर दिल्ली पधार रहे समस्त आर्यजनों की सुविधा हेतु सूचित किया जाता है कि रेलवे आरक्षण 60 दिन पूर्व आरम्भ हो जाते हैं, कृपया इसका ध्यान रखते हुए रेलवे आरक्षण कराएं। जिन स्थानों से किन्हीं विशेष दिनों में ही ट्रेन चलती हैं और उनकी ट्रेन दिल्ली 28 या 29 अक्तूबर को दिल्ली पहुंचती है तो उनके लिए विशेष रूप से सम्मेलन स्थल पर ही आवास एवं भोजन व्यवस्था 28 की रात्रि से उपलब्ध कराई जाएगी। महासम्मेलन में दिल्ली पधारने वाले समस्त आर्यजनों को दिल्ली के प्रमुख रेलवे स्टेशनों - नई दिल्ली, दिल्ली जंक्शन, हजरत निजामुद्दीन एवं आनन्द विहार रेलवे स्टेशनों से महासम्मेलन स्थल तक पहुंचाने के लिए बसों की व्यवस्था की गई है। आप कहां से, कब, कितने बजे, किस स्टेशन पर पहुंच रहे हैं, इसकी सूचना अपने ग्रुप लीडर के माध्यम से ग्रुप लीडर के नाम, पते, फोन नं. और ग्रुप में आने वाले सदस्यों की सूची बनाकर सम्मेलन कार्यालय के पते '**15 हनुमान रोड नई दिल्ली-110001**' पर भेजें अथवा **aryasabha@yahoo.com** पर ईमेल करें। अपने ईमेल/पत्र पर 'आवास एवं ट्रांसपोर्ट व्यवस्था हेतु' अवश्य लिखें ताकि आपके लिए आवास एवं ट्रांसपोर्ट की व्यवस्था की जा सके। अधिक जानकारी लिए **9311721172** से सम्पर्क करें।

- ज्ञान ज्योति पर्व महोत्सव आयोजन समिति

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज गोविन्द पुरी, नई दिल्ली-110019

प्रधान : श्री प्रेमचन्द गुप्ता
मन्त्री : श्री सुरेशचन्द्र गुप्ता
कोषाध्यक्ष : श्री सत्येन्द्र कुमार मिश्रा

आर्यसमाज पंखा रोड, सी ब्लाक नई दिल्ली-110058

प्रधान : श्री इन्द्रजीत दुग्गल
का. प्रधान : श्री अजय तनेजा
मन्त्री : श्री ओमपाल सिंह आर्य
कोषाध्यक्ष : श्री गुरुदत्त प्रेमी

महिला आर्यसमाज पंखा रोड, सी ब्लाक, नई दिल्ली-110058

प्रधाना : श्रीमती इन्दु रस्तोगी
मन्त्राणी : श्रीमती नीरज कुमारी
कोषाध्यक्षा : श्रीमती कुसुमलता

प्रथम पृष्ठ का शेष

ऐतिहासिक एवं अभूतपूर्व आयोजन हेतु......

की सफलता के लिए विस्तार से विचार विमर्श किया गया और इस सम्मेलन को ऐतिहासिक रूप से अविस्मरणीय बनाने हेतु योजनाओं, जिम्मेदारियों पर भी चिंतन किया गया। उपस्थित अधिकारियों ने अपने विचार प्रस्तुत किए और अपना शत प्रतिशत योगदान देने की बात कही।

प्रधान जी ने उपस्थित संयोजन समिति के अधिकारियों, कार्यकर्ताओं और सदस्यों को संबोधित करते हुए कहा कि अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की तिथियां सर्वविदित हैं और स्थान भी रोहिणी का स्वर्णजयंती पार्क ही है। अतः समिति के सभी सदस्य अपनी-अपनी जिम्मेदारी से परिचित हैं, इस सम्मेलन का बजट अब तक के सम्मेलनों से अधिक लगभग 16 करोड़ है। इसलिए सभी महानुभाव तन, मन, धन से समर्पित भाव संलग्न हो जाएं। आगामी 27 जुलाई को संयोजन समिति की बड़ी बैठक की घोषणा की गई, जिसमें सम्मेलन में सभी भूमिकाओं को लेकर विशेष चर्चा और निर्धारण किया जाएगा। सभी सदस्यों ने सामूहिक रूप से अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में विश्व भर के आर्यजनों को एक साथ मिलकर आमंत्रित किया। आर्य समाज अमर रहे, वेद की ज्योति जलती रहे, ओम का झंडा ऊंचा रहे और महर्षि दयानंद सरस्वती जी की जय के नारों से संपूर्ण वातावरण उत्साह से परिपूर्ण हो गया। सभा प्रधान जी ने आर्य समाज के सभी अधिकारियों का आभार व्यक्त किया, शांति पाठ के बाद जलपान के साथ बैठक संपन्न हुई।

इस क्रम में अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की भव्यता, विराटता और विशालता के अनुरूप ही इसकी तैयारियां भी हर स्तर पर पूरे योजनाबद्ध तरीके से की जा रही हैं। अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की दिल्ली संयोजन समिति के तत्वावधान में विभिन्न आर्य समाजों में, वेदप्रचार मंडलों के अधिकारियों, आर्य समाजों के अधिकारी, कार्यकर्ता और सदस्यों के साथ महत्वपूर्ण बैठकें सफलता पूर्वक संपन्न हो रही हैं। इसके अन्तर्गत इस हेतु गत दिनों में आर्यसमाज सैनिक विहार, आर्यसमाज मोती बाग एवं आर.के.पुरम् सैक्टर-3 की संयुक्त बैठक, आर्यसमाज गोविन्दपुरी, आर्यसमाज कालकाजी, आर्यसमाज मोहन गार्डन-उत्तम नगर, आर्यसमाज यमुना विहार, आर्यसमाज लाजपत नगर, आर्यसमाज पालम विहार, आर्यसमाज नजफगढ़, आर्यसमाज खजूरी खास, आर्यसमाज हौजखास, आर्यसमाज सरिता विहार एवं आर्यसमाज मोलडबन्द विस्तार नई दिल्ली में आर्यसमाज के महा जनसम्पर्क अभियान के लिए बैठकें सम्पन्न हुई हैं तथा निरन्तर बैठकों का दौर जारी है। जिनमें जन संपर्क महा अभियान के अंतर्गत महर्षि दयानंद सरस्वती जी की शिक्षाओं, आर्य समाज के सेवा कार्यों, सिद्धांतों, मान्यताओं और परंपराओं को जन-जन तक पहुंचाने के लिए तथा आर्य महासम्मेलन की तैयारियों में सहभागी बनने के लिए आह्वान लगातार किया जा रहा है।

उ. प्रदेश सरकार द्वारा नशामुक्त समाज शपथ के साथ शराब बंदी महासम्मेलन सम्पन्न

नशा केवल व्यक्ति नहीं परिवार, समाज और राष्ट्र के लिए खतरा

- देवेन्द्र पाल वर्मा, प्रधान

अन्तर्राष्ट्रीय मद्य निषेध दिवस के अवसर पर दिनांक 26 जून, 2025 को शराब बंदी संघर्ष समिति द्वारा स्थान-उर्दू अकादमी, विभूति खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ में शराब बंदी महासम्मेलन का आयोजन किया गया। महासम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. के प्रधान श्री देवेन्द्रपाल वर्मा जी ने कहा कि "सम्पूर्ण भारत में शराब के कारोबार को समाप्त करने की सख्त आवश्यकता है, क्योंकि भारत का संविधान कहीं भी नशे के व्यापार की अनुमति नहीं देता। राज्य सरकारें भारी राजस्व व मुनाफे के लालच में शराब के ठेके नीलाम करती है। जबकि शराब पीकर होने वाली दुर्घटनाओं के मुआवजे व चिकित्सा आदि में उससे कहीं ज्यादा खर्च हानि होती है। सौ-पचास रूपये की शराब पीकर ड्राईवर चालीस-पचास आदमियों को मौत की नींद सुला देता है। वेदों में भी शराब आदि नशे का सेवन करने से स्पष्ट मना किया गया है। शराब बंदी सम्मेलन का शुभारम्भ माननीय उपमुख्य मंत्री उ.प्र. सरकार श्री ब्रजेश पाठक जी ने किया। इस अवसर पर श्री दानिश अंसारी राज्य मंत्री स्वतंत्र प्रभार उ.प्र. सरकार, श्री कौशल किशोर जी, पूर्व केन्द्रीय मंत्री भारत सरकार, श्री हरपाल सिंह जी पूर्व मंत्री उ.प्र. सरकार, मो. हारून वारसी जी अध्यक्ष नगर पंचायत, मौलाना सिब्ते नूरी जी, मुस्लिम धर्मगुरू, श्री वेदव्रत बाजपे, राष्ट्रीय कवि वीर रस, श्री मुर्तजा अली संयोजक एवं राष्ट्रीय अध्यक्ष शराब बंदी संघर्ष समिति, श्री रोहित अग्रवाल, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, श्री सुल्तान सिंह, श्री राज कुमार सिंह, श्री वेद प्रकाश शास्त्री इत्यादि महानुभाव उपस्थित रहे। भारत के 12 राज्यों व उ.प्र. के 75 जनपदों के प्रतिनिधियों ने हिस्सा लेकर नशा मुक्त समाज बनाने का संकल्प लिया।

-देवेन्द्र पाल वर्मा, प्रधान

पृष्ठ 2 का शेष

महाराष्ट्र में हिंदी के विरोध से क्या ....

प्रत्येक क्षेत्र में उन्होंने अल्पसंख्यकों की तरफदारी की है। गुरुमुखी को पंजाबी हिन्दुओं पर लादना यह सन् 1950 से ही प्रारम्भ था।

जब हिन्दी प्रेमियों ने सरदार प्रताप सिंह कैरो की सरकार को गुरुमुखी के विरुद्ध लाखों पत्र हस्ताक्षर कर केंद्र और पंजाब सरकार को भेजे गये, तथा आर्य समाज के स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी का पंजाब का तूफानी दौरा प्रारम्भ हुआ तो सरकार घबरा गयी तथा कानून को ठण्डे बस्ते में डालकर रख दिया गया। तथा जगह-जगह सरकार के विरुद्ध अनेक जगह से प्रस्ताव भेजे जाने से भी सरकार घबरा गयी। सन् 1957 तक कैरो सरकार मौन बैठी रही अन्दरखाने कुचक्र रचने का षड्यन्त्र करती रही। इसके बाद फिर पंजाब हरियाणा के स्कूलों में गुरुमुखी की पढ़ाई अनिवार्य कर दी तो पंजाब हरियाणा के ही नहीं भारत के सभी आर्यों ने विरोध करना शुरू कर दिया।

सभी हिन्दी भाषी प्रान्तों के आर्यों में जोश उभरकर आ गया। हरियाणा तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के नेताओं ने जिनमें स्वामी आत्मानन्द जी, पं०जगदेव सिद्धान्ती जी, प्रिं. भगवानदास जी तथा प्रिं. नारायणदास जी ग्रोवर तथा ओमानन्द जी (आचार्य भगवान देव जी) के नेतृत्व में पंजाब सरकार के विरुद्ध सत्याग्रह का ऐलान कर दिया। सभी ने सत्याग्रह में अधिक से अधिक हिन्दी प्रेमियों को लाने का निश्चय किया। पहले तो केवल दो विभागों (पंजाब व हरियाणा) से सत्याग्रहियों को जुटाने का निर्णय लिया गया था, लेकिन जब यह वार्ता (सत्याग्रह की) पूरे देश में फैल गयी तब दक्षिण से लेकर उत्तर तक के सभी प्रान्तों से हिंदी सत्याग्रही पंजाब की ओर आने के लिए निकल पड़े। आर्यो के और एक हिन्दी सत्याग्रह ने एक बड़े आंदोलन का रूप धारण कर लिया। इस सत्याग्रह में 50 हजार से अधिक लोगों ने भाग लिया तथा 10 से बारह हजार हिन्दी प्रेमी जेलों में बन्द किये गये तथा 20 के करीब शहीद हो गये थे। घनश्याम सिंह गुप्त उस समय लोकसभा के स्पीकर थे उन्होंने भी सत्याग्रह के पक्ष में अपने पद से त्याग पत्र दे दिया। भारत सरकार इस आन्दोलन से चिन्तित हो गयी, वह कि कर्तव्य विमूढ होकर अन्त में 8 जनवरी सन् 1958 को उसने निर्णय लिया कि वह आन्दोलकों की सभी मांगों को स्वीकार करती है।

उसके बाद सत्याग्रहियों को सिल-सिलेवार जेलों से मुक्त कर दिया गया। सारे हिंदी जगत् में खुशी और उत्साह की लहर दौड़ पड़ी। लोगों ने उत्सव मनाया। पंजाब और केन्द्र सरकार को हिन्दी प्रेमियों के आगे मजबूर होकर झुकना ही पड़ा चाहे बाद में वे इससे मुकर गये हों। लेकिन इसका प्रतिफल सन् 1966 में पंजाब सरकार को मिल ही गया, कारण 9 साल बाद हरियाणा पंजाब प्रान्त से अलग होकर नया हरियाणा प्रदेश बन गया।

महाराष्ट्र में हिंदी-मराठी भाषा पर विवाद के बीच इतना तो निश्चित है कि चाहे राजनीति के चलते सत्ता अथवा विपक्ष कितनी भी कोशिश क्यों न करें लेकिन हिंदी के बढ़ते वर्चस्व को समाप्त करना असंभव है। क्योंकि इस सर्वाधिक उपयोगी हिंदी भाषा के लिए आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द और उनके अनेक शिष्यों ने अपना बलिदान देकर हिंदी रक्षा के लिए सफल ऐतिहासिक सत्याग्रह किए हैं। **- सम्पादक**

सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, दिल्ली-2025

ऐतिहासिक रूप से भव्य, सफल एवं प्रेरणाप्रद बनाने हेतु सुझाव आमन्त्रित

समस्त सुधी पाठकों, वैदिक विद्वानों, लेखकों, चिन्तकों, आर्यसमाज के हितैषी महानुभावों से अनुरोध है कि अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन को सफल और प्रेरणाप्रद बनाने के लिए अनुभवों के आधार पर अपने उपयोगी सुझाव अवश्य प्रदान करें। आपने वर्ष 2006 के उपरान्त तथा इससे भी पूर्व में आयोजित महासम्मेलनों में भाग लिया है। इन सम्मेलनों में आपको कुछ व्यवस्थाएं अच्छी लगी होंगी तथा कुछ में सुधार की अपेक्षा भी रही होगी।

अतः आपसे निवेदन है कि आने वाले सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन को ऐतिहासिक रूप से सफल और अविस्मरणीय बनाने के लिए कृपया अपने सुझाव **15 जुलाई 2025** तक भेजने की कृपा करें, जिससे उन सुझावों पर विचार करके उन्हें प्रयोग में लाया जा सके। कृपया अपने सुझाव निम्न पते पर भेजें अथवा ईमेल करें -

संयोजक समिति

सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, दिल्ली-2025

15, हनुमान रोड, नई दिल्ली- 110001, मो. 9311721172

Email:aryasabha@yahoo.com

साप्ताहिक
आर्य सन्देश

सोमवार 7 जुलाई, 2025 से रविवार 13 जुलाई, 2025
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं. डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2024-25-2026
LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 10-11-12/07/2025 (वीर-शुक्र-शनिवार)
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2024-25-26
आर.एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 9 जुलाई, 2025

आर्यसमाज सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन
30-31 अक्तूबर - 1-2 नवम्बर, 2025 दिल्ली

दो विशेष बिन्दुओं पर केन्द्रित होगा यह महासम्मेलन

महर्षि दयानन्द जी की 200वीं जयन्ती एवं आर्यसमाज के 150वें स्थापना वर्ष के ज्ञान ज्योति पर्व महोत्सव के आयोजनों के समापन के रूप में 30 अक्तूबर से 2 नवम्बर, 2025 तक आयोजित होने वाला **आर्यसमाज सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, दिल्ली-2025** ऐतिहासिक रूप से दो विशेष बिन्दुओं पर केन्द्रित रहेगा। समस्त आर्यजनों का सहयोग इस कार्य के लिए अपेक्षित रहेगा। अत: आप सब इन बिन्दुओं को दृष्टिगत रखते हुए कार्य करें, ऐसा विशेष निवेदन है-

1. आर्य परिवारों का अनूठा संगम बनेगा महासम्मेलन - इस महासम्मेलन में आर्यसमाज के सब परिवारों के प्रत्येक सदस्य, चाहे वे देश-विदेश में कहीं भी रहते हों, उन्हें आमन्त्रित करके आर्य महासम्मेलन को आर्य परिवारों का अनूठा संगम बनाने का प्रयास किया जाएगा। अत: आपके परिवार के भी यदि कोई सदस्य आपसे अन्यत्र देश-विदेश में कहीं भी रहते हों, उन्हें अवश्य आमन्त्रित करें और परिवार के सब सदस्यों के साथ अवश्य ही पधारें। यदि किन्हीं कारणवश आप स्वयं उन्हें आमन्त्रित नहीं कर पा रहे रहे हैं तो उनका नाम, पता, मो.नं. और ईमेल पता लिखकर संयोजक समिति के पते पर भेजें, उन्हें आयोजन समिति की ओर से आमन्त्रित किया जाएगा।

2. प्रत्येक आर्यजन होगा आर्य महासम्मेलन का आयोजक - प्रत्येक आर्यसमाज के वे अधिकारी, सदस्य एवं कार्यकर्ता इस महासम्मेलन के आयोजक की भूमिका में होंगे जिन्होंने गत दो वर्षों में जन सम्पर्क अभियान के अन्तर्गत आर्यसमाज के इतर अन्य महानुभावों तक पहुंचने और 200वीं जयन्ती, 150वें स्थापना वर्ष और आर्यसमाज के कार्यों और गतिविधियों की जानकारी प्रदान की है। ऐसे समस्त आर्यजनों, अधिकारियों, कार्यकर्ताओं और आर्यसन्देश साप्ताहिक के पाठकों से निवेदन है कि वे उन सभी महानुभावों को इस आयोजित होने वाले सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में अवश्य आमन्त्रित करें और हो सके तो अपने साथ ही लेकर आएं, जिनसे आपने गत दिनों में महा जनसम्पर्क अभियान के अन्तर्गत सम्पर्क किया है।- **ज्ञान ज्योति पर्व महोत्सव आयोजन समिति**

महर्षि दयानन्द के जीवन, कार्य, इतिहास-लेखन, स्मृतियों के बारे में जानने के लिए
8447-200-200
मिस्ड कॉल करें

प्रतिष्ठा में,

आर्यसमाज सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन
30-31 अक्तूबर - 1-2 नवम्बर, 2025 दिल्ली

आयोजन की तिथियों का विशेष ध्यान रखें आर्यजन

समस्त आर्यजनों की सूचनार्थ है कि कुछ समय पूर्व की दिल्ली में होने वाले अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की तिथियां 9-10-11-12 अक्टूबर 2025 की घोषणा गई थीं। किन्तु पर्व-त्यौहारों के होने एवं स्थान की अनुपलब्धता के कारण अब यह सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 30 अक्टूबर से 2 नवम्बर 2025 को आयोजित किया जाना सुनिश्चित किया गया है। अत: इस परिवर्तन को स्वीकार करें और अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन -30 अक्टूबर से 2 नवम्बर, 2025 में दिल्ली पधारने के लिए अपनी तैयारियों में जुट जाएं।

- ज्ञान ज्योति पर्व महोत्सव आयोजन समिति

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा विद्या दर्शन ऑफसैट प्रिंटर्स, यूनिट नं.-21, प्रधान कॉम्प्लेक्स, मेन रोड मंडावली, दिल्ली-92 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह